

# डॉ. गैरी मीडर्स, ईश्वर की इच्छा को जानना, सत्र 6, हमने जो सीखा है उसका मूल्यांकन करना

© 2024 गैरी मीडर्स और टेड हिल्डेब्रांट

परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए बाइबिल धर्मशास्त्र पर इन व्याख्यानों में आपका स्वागत है। मैं गैरी मीडर्स हूँ, जैसा कि आप अब तक अच्छी तरह से जानते हैं, और हम कुछ काम करने जा रहे हैं। सबसे पहले, मैं चाहता हूँ कि आप अपनी विषय-सूची की समीक्षा करें, अगर आपको कोई आपत्ति न हो।

यह विषय-सूची में आपका हैंडआउट है। हमने अभी-अभी नए नियम में परमेश्वर की इच्छा के बारे में पढ़ना समाप्त किया है। मैं आपको यह भी बताना चाहता था। मैं यह बताना भूल गया, लेकिन मैंने आपको उस भाग में एक हैंडआउट दिया है जिसमें आपको नए नियम में ईश्वरीय नाम के साथ इच्छा शब्द की सभी घटनाओं के बारे में बताया गया है।

इनमें से केवल 50 या उससे ज़्यादा ही हैं। मैं व्याख्यात्मक कॉलम में भी गया, जब संदर्भ ईश्वर की इच्छा के बारे में था, तो मैंने 'करो' शब्द डाला, और आप देखेंगे कि यह कैसे हावी है। आपके लिए उन ग्रंथों को देखना महत्वपूर्ण है।

मुझे लगता है कि मेरे पास एक ग्रीक कॉलम भी था। यह उन लोगों के लिए है जो इसका इस्तेमाल कर सकते हैं, लेकिन इसकी चिंता न करें। ग्रीक शब्द काफी सुसंगत है, और इसके साथ सेलेमा का उपयोग किया जाता है।

तो, आज वापस जाइए और उस पर एक नज़र डालिए। हम जी.एम. छह करने जा रहे हैं। यह एक तरह से इस बात का आकलन है कि हम कहाँ से आए हैं।

जीएम छह, व्याख्यान छह, हमने जो सीखा है उसका मूल्यांकन। मैं बस जल्दी से इसकी समीक्षा और सारांश प्रस्तुत करना चाहता हूँ। और फिर हम आगे बढ़ेंगे।

और आप देखेंगे कि इस व्याख्यान के बाद, हम एक नए भाग में जाते हैं। हम पहले भाग में थे; परमेश्वर की इच्छा की समझ शास्त्र पर आधारित है। और हमने धर्मशास्त्र, नैतिकता और बाइबिल के पाठ पर बहुत कुछ देखा है।

दूसरे भाग में, हम विश्वदृष्टि और मूल्यों के बारे में थोड़ा और विस्तार से जानेंगे। अब, क्योंकि मैंने आपको शुरुआत में ही एक सारांश प्रस्तुत किया था, इसलिए थोड़ा सा डेजा वु होगा। थोड़ा दोहराव होगा।

संयुक्त राज्य अमेरिका में एक कहावत है जिसे पढ़ना, लिखना और अंकगणित कहते हैं। इसमें प्रत्येक के लिए R का उपयोग किया जाता है और उसके लिए शब्द-चयन भी किया जाता है। खैर, मैं उन तीन R को लेता हूँ और इसे एक अलग रूप देता हूँ।

इसमें दोहराव, दोहराव और दोहराव है। हम इसी तरह से सीखते हैं। बाइबल भी ऐसा ही करती है।

याद रखें, कभी-कभी बाइबल में याद रखें शब्द को देखें। पूरी बाइबल में इसका उल्लेख बाद में पीटर में भी आता है। और बेशक, मूसा और अन्य लोगों के साथ कथा में, उन्हें उन चीजों की याद दिलाते हुए जो घटित हुई थीं।

और तीन आर भी हैं - पढ़ो, पढ़ो, पढ़ो। आप वहीं हैं जो आप पढ़ते हैं। अगर आप पढ़ने और अध्ययन करने वाले व्यक्ति नहीं हैं, तो आप खुद को बहुत अच्छी तरह से आगे नहीं बढ़ा सकते।

बस मेरी बात सुनकर, मुझे उम्मीद है कि यह कुछ हद तक मज़ेदार होगा, लेकिन बात करने वाला सिर उतना बढ़िया नहीं है। लेकिन इसीलिए मैंने आपको बहुत सारे नोट्स दिए हैं ताकि आप अपने अध्ययन के साथ खुद को आगे बढ़ा सकें। और फिर शोध, शोध, शोध।

मैं यह काम लंबे समय से कर रहा हूँ। और जब मैं किसी विषय पर आता हूँ तो कई बार मुझे एक बच्चे जैसा महसूस होता है क्योंकि यह पवित्रशास्त्र पर लगातार शोध करना है। अगर यह सच नहीं होता, तो यह ईश्वर की पुस्तक नहीं होती, है न? इसकी प्रस्तुति बहुत बड़ी है और कम से कम पश्चिमी दुनिया में यह सबसे प्रभावशाली पुस्तकों में से एक रही है।

तो, व्याख्यान 6, हमने जो सीखा है उसका मूल्यांकन करना, यही वह है जिसे हम आज देखने जा रहे हैं। तो, अगर आपके पास अपनी स्लाइड्स हैं, तो मुझे नहीं लगता कि इस बार कोई सहायक नोट हैं, लेकिन आपके पास अपनी स्लाइड्स हैं, और हम अब उन पर ध्यान देंगे। परमेश्वर की इच्छा को समझने के लिए बाइबल से परमेश्वर की इच्छा के बारे में जो कुछ हमने सीखा है उसका सारांश और मूल्यांकन करना आवश्यक है।

अब, उनमें से कुछ बातें क्या हैं? सबसे पहले, पुराना नियम और नया नियम परमेश्वर की इच्छा को परमेश्वर की संप्रभुता के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वह अपनी सृष्टि पर संप्रभु है। परमेश्वर को कोई भी बात आश्चर्यचकित नहीं करती, और उसके पास एक योजना है, लेकिन यह गुप्त हिस्सा है।

हम हमेशा यह नहीं जानते। परमेश्वर की नैतिक इच्छा, जहाँ उसके निर्देश दिए गए हैं, न केवल कानून जैसी संहिताबद्ध चीजों में बल्कि कथाओं में भी और जिस तरह से यह हमें सिखाता है कि परमेश्वर छुटकारे की पंक्ति में लोगों के साथ कैसे व्यवहार करता है। नया नियम पुराने नियम के समान ही पैटर्न का अनुसरण करता है।

यह ईश्वर की संप्रभुता है। यह ईश्वर की नैतिक इच्छा है। यह बहुत स्पष्ट है।

हमें कभी भी परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए नहीं कहा गया है। हमें हमेशा ऐसा करने के लिए कहा जाता है। बाइबल यही कहती है।

परमेश्वर की इच्छा पूरी करो। परमेश्वर ने जो सिखाया है, उसे पूरा करो। अब, जाहिर है, क्योंकि बाइबल एक बड़ी किताब है, और हम वचन के विद्यार्थी हैं, और शास्त्र को पढ़ने और व्याख्या करने के मामले में बहुत सारी चुनौतियाँ हैं, हमें यह पता लगाना होगा कि बाइबल क्या कह रही है।

लेकिन यह एक अलग श्रेणी है। हम पाते हैं कि वह क्या कह रहा है और समझते हैं कि वह क्या कह रहा है, और हम वही करते हैं जो वह कहता है, और यह ईश्वर की इच्छा की क्रियात्मक प्रकृति है। इसलिए, हमें इसे खोजने के लिए कभी नहीं कहा जाता है।

परमेश्वर ने अपनी इच्छा जानने के लिए अपने रहस्योद्घाटन को एक मार्ग के रूप में प्रदान किया। यही कारण है कि बाइबल इतनी महत्वपूर्ण है। कभी-कभी, ईसाई संस्कृति में, लोग थक जाते हैं और कहते हैं कि आप बाइबल में इतनी रुचि रखते हैं कि यह बाइबिल-पूजा है।

खैर, मुझे लगता है कि कोई ऐसा कर सकता है। लेकिन सच्चाई यह है कि ईश्वर के बारे में यही एकमात्र वैध, स्पष्ट रहस्योद्घाटन है जो हमारे पास है। बाकी सब कुछ व्यक्तिपरक क्षेत्र में है और सवाल के लिए खुला है।

लेकिन परमेश्वर का वचन परमेश्वर और उसकी इच्छा के बारे में जानकारी का हमारा मुख्य स्रोत है। इसलिए यह बिल्कुल ज़रूरी है कि हम न केवल परमेश्वर के वचन को पढ़ें बल्कि हम इसकी जाँच भी करें। इसे पढ़ना बहुत बढ़िया है, लेकिन यह बहुत ही सतही हो सकता है क्योंकि आप पाठ की जाँच करने और दूसरे लोग उस पाठ के बारे में क्या कहते हैं, इसकी तुलना करने के बजाय अपनी खुद की पूर्वधारणाओं और विचारों और परंपराओं को पढ़ते हैं।

और इसी तुलना में कई बार आप वास्तव में यह समझने लगते हैं कि आप क्या मानते हैं और दूसरे क्या मानते हैं। इसलिए, परमेश्वर ने उस रहस्योद्घाटन को आदर्श के रूप में प्रदान किया। अब, ऐसे शब्द हैं जो परमेश्वर के अंतिम नियंत्रण की पुष्टि करने वाले शब्दों से जूझ रहे हैं।

तीन मुख्य शब्द हैं। हमने इन सभी के बारे में बात नहीं की है। उदाहरण के लिए, पहले वाले में, तीन शब्द हैं जो परमेश्वर के अपनी सृष्टि के साथ संबंध को दर्शाते हैं।

पहला है आदेश। हम परमेश्वर की आज्ञा के बारे में बात करते हैं। यह किसी भी चीज़ की रचना करने से पहले की बात है।

यह वही है जिसे हम त्रिदेवों की मूल बैठक कहते हैं। इसमें वह योजना भी बताई गई है जिसे परमेश्वर हमारे माध्यम से दुनिया में लागू करने जा रहा है। आदेश वाला हिस्सा, हम बस उसके बारे में थोड़ी देर बात करेंगे।

हमने संप्रभुता के बारे में थोड़ी बात की है। संप्रभुता वास्तव में एक संज्ञा है जो हमें बताती है कि ईश्वर कौन है। वह संप्रभुता से काम करता है, जो उसके कार्य हैं, लेकिन ईश्वर के कार्यों के संबंध में प्रोविडेंस एक ऐसा शब्द है जो बहुत महत्वपूर्ण है।

और हम इसके बारे में किसी दूसरे व्याख्यान में और बात करेंगे। लेकिन फिर भी, ये वो बातें हैं जिनका हमने ज़िक्र किया है। आइए एक मिनट के लिए ईश्वर की इच्छा के बारे में बात करें।

यह बहुत महत्वपूर्ण है। मैंने एक पुराने स्वीकारोक्ति से एक कथन निकाला है। यह एक बैपटिस्ट स्वीकारोक्ति है।

हो सकता है कि यह बैपटिस्ट स्वीकारोक्ति वेस्टमिंस्टर स्वीकारोक्ति से प्रेरित थी और उस पर बहुत हद तक निर्भर थी। पश्चिमी दुनिया में ये बहुत आम हैं, चाहे उनके साथ किसी का भी नाम जुड़ा हो। लेकिन यहाँ कथन है।

और इसमें कुछ पुरानी जेम्स इंग्लिश है अगर आप इसे बर्दाश्त कर सकें। मैं इसे अपने नज़रिए से अनुवाद करने की कोशिश करूँगा। ईश्वर ने अनंत काल से ही अपनी इच्छा के सबसे बुद्धिमान और पवित्र परामर्श द्वारा, स्वतंत्र रूप से और अपरिवर्तनीय रूप से सभी चीज़ों को घटित होने का आदेश दिया है।

फिर भी, इस तरह से परमेश्वर न तो पाप का लेखक है, भले ही उसने सभी चीज़ों की योजना बनाई हो, उसने इसमें योजना बनाई है, पाप का कारण बनने के लिए नहीं, न ही उसमें किसी पाप के साथ संगति है, न ही प्राणी की इच्छा के लिए वैधता प्रदान की जाती है। वैधता मानवीय क्षेत्र का हिस्सा बन जाती है। आप कहेंगे, अच्छा, भगवान अभी भी आस-पास है, है न? हाँ, लेकिन वह हमेशा हस्तक्षेप करना नहीं चुनता है।

अभी नहीं। अभी शब्द पर ध्यान दीजिए। मैं बाद में इस पर वापस आऊँगा।

न ही आज्ञादी है। इसका मतलब है कि स्वतंत्र इच्छा जैसी कोई चीज़ है। जैसा कि हमने अतीत में परिभाषित किया है, आपकी इच्छा का खिंचाव आपकी प्रकृति की दिशा में है।

तो फिर भी, दूसरे कारणों की स्वतंत्रता या आकस्मिकता को हटा दिया गया है। हमने इस बारे में बात नहीं की है। मैं कुछ समय बाद कुछ और बताने जा रहा हूँ, बल्कि, वह स्थापित है जिसमें सभी चीज़ों को निपटाने, उनसे निपटने में उसकी बुद्धि और अपने आदेश को पूरा करने में शक्ति और ईमानदारी दिखाई देती है।

इसलिए, बेशक, चर्च के इतिहास में ईश्वर और ईश्वर के कार्यों की व्याख्या करने के लिए बहुत से बदलाव हैं। ओपन थिड्ज़म मूवमेंट नामक एक आंदोलन है, जिसके बारे में मुझे ज़्यादा जानकारी नहीं है। मुझे नहीं लगता कि यह सही दिशा में है, लेकिन यह कहता है कि ईश्वर वास्तव में समय से पहले चीज़ों को नहीं जानता है, लेकिन वह तब उससे निपटता है जब वह घटित होता है।

मुझे यकीन है कि यह बहुत सरल है, लेकिन मैं इस विचार से सहमत नहीं हूँ। लेकिन मैं यह बताना चाहता हूँ कि दुनिया में जो कुछ भी हो रहा है, उसे तय करते समय भगवान ने बहुत सी ऐसी चीज़ों को अलग रखा है जो इसका हिस्सा हैं। यही मानवीय स्वतंत्रता का पहलू है।

और इसे परिभाषित किया जाना चाहिए, लेकिन यह वहाँ है। दूसरे कारणों की यह बात, आप इसके बारे में बहुत ज़्यादा नहीं सुनते हैं। लेकिन मैं यह स्पष्ट करना चाहूँगा कि यह किस बारे में बात कर रहा है।

उदाहरण के लिए, एक पति दिन में जल्दी घर आता है, और वह अपनी पत्नी और प्रेमी को बेडरूम में पाता है, जिसके बारे में पति को बिल्कुल भी पता नहीं था। वह अंदर जाता है और उन दोनों को गोली मार देता है। हत्या किसने की? खैर, कानून यह बिल्कुल स्पष्ट करता है।

उसने उन्हें मार डाला। लेकिन विवाह की शपथ के उल्लंघन और उसके घर में इस घुसपैठिये के कारण के बारे में क्या? मानवीय दृष्टिकोण से, हम वे प्रश्न पूछते हैं, लेकिन कानूनी क्षेत्र में, उन्हें कारण नहीं माना जाता है; वे व्यक्ति हैं जिन्होंने वास्तव में ट्रिगर खींचा। खैर, भगवान की रचना में, यह इतना सरल नहीं है।

उदाहरण के लिए, क्या भगवान शराबियों को बच्चों को कुचलने के लिए प्रेरित करते हैं, ताकि वे लोगों को मार सकें? नशे में धुत्त होकर, गलत लेन में जाकर एक परिवार को खत्म करने जैसे पापपूर्ण कार्यों में। इसमें एक कारणात्मक पहलू है। भगवान अक्सर ऐसे कारणात्मक नकारात्मक प्रावधान में हस्तक्षेप करना नहीं चुनते हैं।

द्वितीयक कारणों का प्रश्न धर्मशास्त्र में एक बहुत बड़ी बात है जिस पर हम यहाँ चर्चा नहीं करेंगे। लेकिन उन्होंने इस स्वतंत्रता को स्थापित किया है। उन्होंने द्वितीयक कारणों के मुद्दे को स्थापित किया है।

हालाँकि, हम उन्हें अपने दृष्टिकोण से परिभाषित करते हैं, और उसकी बुद्धि इन सभी चीजों को निपटा देती है। इसलिए, दूसरे शब्दों में, परमेश्वर का आदेश कोई सरल संप्रभुता नहीं है। यह कोई सरल पूर्वनिर्धारण नहीं है।

यह कोई साधारण पूर्वज्ञान नहीं है, बल्कि यह ईश्वर द्वारा सृष्टि से निपटने और उसे इस तरह से प्रबंधित करने का तरीका है कि मानवीय पहलू को उसके द्वारा डिजाइन की गई चीज़ों में शामिल किया जाए। यह बहुत से लोगों के वेतन स्तर से कहीं ऊपर है, शायद मेरे वेतन स्तर से भी ऊपर। मैंने ये सभी चीज़ें पढ़ी हैं, लेकिन यह दार्शनिक धर्मशास्त्र का एक बहुत गहरा स्तर है।

चर्च ने कई मौकों पर इस पर विचार किया है। लेकिन उसकी निर्णायक इच्छा स्थापित है, और हम इसे परमेश्वर की संप्रभु इच्छा के बारे में बात करने के क्षेत्र में लाते हैं। इसलिए हमें आदेश, संप्रभुता मिली।

आइए एक पल के लिए इस पर गौर करें। परमेश्वर का आदेश परमेश्वर की शाश्वत सलाह से संबंधित है। आप इसे धर्मशास्त्र की पुस्तकों में पढ़ेंगे।

उसने अपनी दुनिया के लिए क्या पूर्वनिर्धारित किया। पूर्वनिर्धारित करना सिर्फ समय से पहले कुछ जानना नहीं है। पूर्वनिर्धारित करना उद्देश्यपूर्ण होता है।

भगवान ने दुनिया को पहले से ही इस तरह से बनाया है, जिसमें वे अन्य चीजें भी शामिल हैं जिनका हमने उल्लेख किया है और शायद योजना के भीतर और भी बहुत कुछ है, जो मानवता को दोषी ठहराता है। इसका मतलब है कि उनके कार्यों के लिए दोषी होना क्योंकि उसने उन्हें उन कार्यों को करने की स्वतंत्रता दी है, और वे इसके लिए जिम्मेदार होने जा रहे हैं। इसलिए, यह एक बहुत ही जटिल जाल है।

संप्रभुता और विधान परमेश्वर के अपने संसार के प्रबंधन से संबंधित हैं। इसका अधिकांश भाग हम देखते हैं, कुछ भाग घटना के बाद, और कुछ भाग इस संदर्भ में भविष्यवाणी की जाती है कि नैतिकता और हमारा नैतिक व्यवहार हमें संसार में किस प्रकार ले जाएगा। संप्रभुता परमेश्वर की एक विशेषता है। अर्थात्, यह परमेश्वर की स्थिति है।

वह हमारा संप्रभु है। ईश्वरीय कार्य ईश्वर की क्रिया है। यह ईश्वर की गतिविधि है।

हम अक्सर उन शब्दों को एक साथ मिला देते हैं। मैंने सुना है कि लोग कभी भी प्रोविडेंस शब्द का इस्तेमाल नहीं करते और हमेशा संप्रभुता के बारे में बात करते हैं। लेकिन हमें स्थिति और गतिविधि जानने की ज़रूरत है।

मुझे लगता है कि कुछ ऐसे पाठ हैं जिन्हें पढ़ना हमारे लिए अच्छा रहेगा। उदाहरण के लिए, रोमियों 8, 28 से 30। इस विशेष पाठ के बारे में कुछ बातें हैं जिन्हें समझने की ज़रूरत है, लेकिन हम यहाँ वह सब नहीं करने जा रहे हैं क्योंकि यह रोमियों 8:28 में बहुत ही आम तौर पर उद्धृत पाठ है।

आप सभी शायद यह जानते होंगे। और हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं, उनके लिए सभी चीजें मिलकर भलाई के लिए काम करती हैं। खैर, आप शायद ऐसे देश में हों जहाँ आपको सताया जा रहा हो, और आप सोच रहे हों कि इसमें अच्छा क्या है।

इस तरह की बातों को समझाना और समझना ज़रूरी है, है न? अच्छे के लिए मिलकर काम करें, उन लोगों के लिए जिन्हें उसके उद्देश्य के अनुसार बुलाया गया है। सूली पर जलाया जाना, सिर कलम किया जाना, पिछले कई दशकों से चली आ रही शहादत। कुछ लोग कहते हैं कि पिछले 50 सालों में ईसाई दुनिया में पहले के समय की तुलना में ज़्यादा शहीद हुए हैं।

अफ्रीका, मध्य पूर्व के कुछ देशों और अन्य जगहों पर ईसाई धर्म का बहुत ज़्यादा उत्पीड़न हुआ है। और किसी को आश्चर्य होता है कि यह मेरे लिए कैसे अच्छा हो रहा है? खैर, मैं अभी इस पर बात करना बंद नहीं करूँगा, लेकिन यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में आपको निश्चित रूप से सोचना होगा। अब इसे देखें, 29.

जिन लोगों को उसने पहले से जान लिया था, उनके लिए उसने पहले से नियति भी तय कर दी थी। अब, एक बार फिर, पूर्वज्ञान शब्द को पढ़ने के अलग-अलग तरीके हैं। पूर्वज्ञान को कुछ धर्मशास्त्रों द्वारा इस तरह से लिया जा सकता है और लिया जाता है कि परमेश्वर जानता है कि आप क्या करने जा रहे हैं।

इसलिए, वह इसे अपने आदेश में शामिल करता है कि आप इसे करेंगे। या कुछ लोग कहेंगे कि पूर्वज्ञान वास्तव में परमेश्वर के उद्देश्य का एक शब्द है कि वह समय से पहले जानता है कि यह कैसे होने वाला है। यह बहुत सरल है, लेकिन पूर्वज्ञान केवल समय से पहले ज्ञान से अधिक है।

इसका संबंध उद्देश्य, कार्य और परमेश्वर की इच्छा से है। लेकिन उसे अपने पुत्र की छवि के अनुरूप बनने के लिए भी पूर्वनिर्धारित किया गया है। वहाँ दिए गए जोर पर ध्यान दें।

उनके बेटे की छवि एक नैतिक छवि है। यह कोई भौतिक प्रतिनिधित्व नहीं है। यह एक नैतिक छवि है, ठीक वैसे ही जैसे ईश्वर की छवि में होना।

यह कोई भौतिक चित्रण नहीं है, बल्कि यह परमेश्वर के तरीकों की प्रतिष्ठा है। पुत्र की छवि के अनुरूप बनाया गया ताकि वह बहुत से भाइयों में ज्येष्ठ हो। जिन्हें उसने पहले से ठहराया था, उन्हें उसने बुलाया भी।

यहाँ परमेश्वर के उद्धार की श्रृंखला है। उसने पहले से नियत किया, उसने बुलाया। जिनको उसने बुलाया, उन्हें उसने धर्मी ठहराया।

और जिन लोगों को उसने धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी, जो कि निश्चित रूप से भविष्य का विषय है। इसलिए, हम यहाँ देखते हैं कि परमेश्वर की आज्ञाकारी संप्रभुता ने कुछ चीजों को गति प्रदान की है जिन्हें वह पूरा करेगा। हम इनमें से अधिकांश को तथ्य के बाद देखते हैं।

इसके अलावा, रोमियों के अध्याय 11 में, हमारे पास एक और कथन है। अध्याय 12 तक पहुँचने से पहले 9 से 11 तक इस्राएल का बहुत बड़ा वर्णन है। लेकिन अध्याय 11, श्लोक 33 में, ओह परमेश्वर की गहराई और धन और बुद्धि और ज्ञान! उसके निर्णय कितने अथाह हैं! उसके मार्ग कितने गूढ़ हैं! उसने हमें बहुत सी बातें बताई हैं, लेकिन हम अभी भी कभी-कभी आश्चर्य में और कभी-कभी हैरान रह जाते हैं।

अय्यूब को बेहतर तरीके से लड़ने के लिए उलझन में होना पड़ा। आप अय्यूब से गुज़रना कैसे पसंद करेंगे? शायद आप में से कुछ लोग भी उस दौर से गुज़रे हों। क्योंकि प्रभु के मन को किसने जाना है? या उसका सलाहकार कौन रहा है? या किसने उसे कोई उपहार दिया है ताकि उसे बदला मिल सके? क्योंकि उसी से, उसी के ज़रिए और उसी के लिए सब कुछ है।

उसकी महिमा सदा-सदा होती रहे। प्रभु के मन को किसने जाना है? हम प्रभु के मन को नहीं जानते, सिवाय इसके कि हमारे पास परमेश्वर का मन हो जो उसके वचन के द्वारा हमें प्रेषित किया गया है। वह हमारा मार्गदर्शक है, हमारे पैरों के लिए हमारा दीपक है, और हमें जीवन में मार्गदर्शन करता है।

इसलिए ईश्वर ने सृष्टि की रचना की है और संसार की रचना की है, और उसने कुछ निश्चित क्रियाकलापों को निर्देशित किया है। और फिर भी, उन क्रियाओं के बीच में, उसने मानवीय स्वतंत्रता के कुछ पहलुओं, कार्य-कारण के कुछ पहलुओं की योजना बनाई है। और यह अत्यंत,

अत्यंत नाजुक हो जाता है कि हम इसका वर्णन कर सकें और धर्मशास्त्रीय विश्लेषण के लिए कारण बता सकें जो इस समय हमारे परे है।

मुझे उम्मीद है कि इससे आपकी जिज्ञासा जागृत होगी और आप इसे अन्य तरीकों से आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित होंगे। इसके अलावा, हमने जो मुख्य अवलोकन देखे हैं। ईश्वर नियंत्रण में है।

सवाल यह है कि कैसे? हम यह सवाल भी पूछ सकते हैं कि कब? क्योंकि हम दुनिया में बहुत भयानक भौतिक बुराई देखते हैं, चाहे वह फ्लोरिडा में तूफान हो, पश्चिमी कैरोलिना, संयुक्त राज्य अमेरिका में बाढ़ हो, या फिलीपींस, इंडोनेशिया और कई अन्य स्थानों में सुनामी हो। हम जिसे भौतिक बुराई कहते हैं, उससे भयानक विनाश देखते हैं। यानी प्रकृति इसमें शामिल हो जाती है।

यह भगवान को आश्चर्यचकित नहीं करता है, लेकिन भगवान ने उन भयानक परिस्थितियों में हस्तक्षेप करने के लिए कई बार नहीं चुना है। और, ज़ाहिर है, कुछ लोग उनकी अपेक्षाओं को पूरा न करने के परिणामस्वरूप एक शाश्वत ईश्वर के विचार के खिलाफ़ जा रहे हैं जिसकी हम पूजा करते हैं। इसलिए, ईश्वर के नियंत्रण को परिभाषित करना एक बहुत ही रचनात्मक निर्माण है।

याद रखें, प्रत्यक्ष शिक्षण, निहित शिक्षण, रचनात्मक निर्माण। निर्माण में हमेशा किसी न किसी तरह से प्रत्यक्ष और निहित शामिल होते हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि दुनिया पर परमेश्वर का नियंत्रण कुछ तरीकों से हमें दिया गया है, लेकिन इसका अधिकांश हिस्सा नहीं है।

जैसा कि उसने व्यवस्थाविवरण में कहा, गुप्त बातें प्रभु की हैं। जो बातें प्रकट की गई हैं, वे हमारी हैं। अब ध्यान दें कि आदेश पर कथन उस शब्द को कैसे समझाएगा।

यह बात यहाँ पहले भी कही जा चुकी है, जैसा कि मैंने आपको स्लाइड 5 में पहले बताया था। फिर भी द्वितीयक कारणों की स्वतंत्रता या आकस्मिकता है। इसे छीना नहीं गया है, बल्कि इसे स्थापित किया गया है। यह आपके धार्मिक चिंतन में सोचने के लिए एक बड़ा मुद्दा है।

मैं आपको सोचने के लिए और भी कुछ बातें दूँगा, और फिर आपके सवालों के जवाब दूँगा। ठीक है। इसके अलावा, परमेश्वर की नैतिक इच्छा, उसकी नैतिकता, परमेश्वर की प्रकट इच्छा शास्त्र में निहित है।

हमने इसे पुराने नियम और नए नियम में देखा है। 1 कुरिन्थियों 2 का समाधान हम नीचे दिए गए चार्ट में थोड़ी देर में देखेंगे। शायद मैं आगे बढ़कर उस पर जाऊँ।

यह डेजा वु है। हमने इसे कई बार देखा है। भगवान अनंत काल से अस्तित्व में थे और उन्होंने दुनिया बनाई।

बगीचे में आदम और हव्वा असफल हो गए। इसने दुनिया को पाप में धकेल दिया, और तब से परमेश्वर मुक्ति के इतिहास में काम कर रहा है। हम परमेश्वर को देखने की कोशिश करते हैं, लेकिन हम इतनी विकृतियों से देख रहे हैं कि यही हमारी बहुत सी विविधता का उत्तर है, यहाँ तक कि चर्च की छत्रछाया में भी, दूसरों और धर्मों के बारे में तो कुछ भी नहीं कहा जा सकता।

लेकिन बाइबल में 1 कुरिन्थियों 2:6-10 आता है। हम इसे कई बार देखेंगे, लेकिन मैं आपको अभी उस अंश पर ले जाना चाहता हूँ। मुझे उम्मीद है कि आप ये अंश पढ़ रहे होंगे।

शायद अगर आप समय से पहले हमारी स्लाइड्स देखें और व्याख्यानों के समय पाठ पढ़ें, तो आप तैयार रहेंगे। लेकिन 1 कुरिन्थियों के अध्याय 1-4 में, पॉल अपनी क्षमायाचना प्रस्तुत कर रहा है। क्षमायाचना एक ऐसा शब्द है जिसका अर्थ है उसका बचाव, उसका तर्क कि वह जिस सुसमाचार का प्रचार कर रहा था, वह वही सुसमाचार है जिसे कुरिन्थियों को सुनने और मानने की आवश्यकता है।

और पौलुस हमें क्या बताने जा रहा है, और यह 1-4 का चरमोत्कर्ष है, वह हमें बताने जा रहा है कि वह जो सुसमाचार प्रचार करता है, वह सत्य जो वह चर्च में लाता है, वह केवल उसका उज्ज्वल विचार नहीं है, बल्कि यह कुछ ऐसा है जिसे परमेश्वर ने प्रकट किया है। ध्यान दें कि वह पद 6 में यह कैसे कहता है। फिर भी, परिपक्व लोगों के बीच, हम ज्ञान प्रदान नहीं करते हैं, हालाँकि यह इस युग का ज्ञान या इस युग के शासकों का ज्ञान नहीं है जो मरने के लिए अभिशप्त हैं। लेकिन हम परमेश्वर का एक गुप्त और छिपा हुआ ज्ञान प्रदान करते हैं, जिसे परमेश्वर ने हमारी महिमा के लिए युगों से पहले निर्धारित किया था।

इस युग के शासकों में से किसी ने भी इसे नहीं समझा। अगर वे इसे समझ पाते, तो वे महिमा के प्रभु को क्रूस पर नहीं चढ़ाते जैसा कि लिखा है। अब, इस पर ध्यान दें।

किसी ने भी नहीं देखा, न ही किसी ने सुना, न ही किसी इंसान के दिल ने कल्पना की कि परमेश्वर ने अपने प्रेम करने वालों के लिए क्या तैयार किया है। लोग इसे पढ़ते हैं और सोचते हैं कि यह स्वर्ग के बारे में एक श्लोक है। इसका स्वर्ग से कोई लेना-देना नहीं है।

यह श्लोक ज्ञानमीमांसा से संबंधित है। इस पर ध्यान दें। इसमें कहा गया है कि इस दुनिया के शासक, दुनिया के बुद्धिजीवी, दुनिया के सबसे बुद्धिमान लोग, ईश्वर को नहीं जानते थे।

क्योंकि उनकी आँखें नहीं देखी गई हैं, उनकी इंद्रियाँ, याद रखें कि ज्ञानमीमांसा के स्रोत इंद्रियों, आँखों, कानों, हृदय, दिमाग, तर्क से संबंधित हैं। उन्होंने परमेश्वर के साथ तर्क नहीं किया; वे परमेश्वर के विरुद्ध हो गए, और उन्होंने नहीं देखा कि परमेश्वर ने उनके लिए उस मुक्तिदायी इतिहास में क्या तैयार किया था।

अब, यह पाठ बहुत बड़ा है। मैंने आपको अंततः एक ग्रंथ सूची दी है। वाल्टर कैसर का एक लेख है, वह नाम जिसे आप वेस्टमिंस्टर जर्नल में पहचान सकते हैं, जिसमें उन्होंने इस पाठ को विस्तार से एक लेख में खोला है जो ईश्वर द्वारा एक शास्त्र देने के बारे में है।

1 कुरिन्थियों 2:6 से 16 शायद सबसे कम इस्तेमाल किए जाने वाले, लेकिन बाइबल में बाइबल के हमारे साथ संचार के बारे में सबसे महत्वपूर्ण अंशों में से एक है। परमेश्वर ने हमें बताया। वास्तव में, श्लोक 10 को देखें, जिसे मैंने नहीं पढ़ा।

मुझे लगता है कि मैंने पढ़ा था। परमेश्वर ने हमें आत्मा के माध्यम से प्रकट किया है। अब, यह मेरे लिए नहीं है।

भगवान ने हमें बताया है। हम प्रेरित समुदाय हैं। यदि आप 2, 6 से पहले और 2, 16 के बाद सर्वनामों को देखें, तो वे मैं, तुम, मैं, तुम, मैं, तुम हैं, लेकिन अध्याय 2:6 से 16 के साथ, वे पहले व्यक्ति बहुवचन हैं।

हम प्रेरित समुदाय के बारे में बात कर रहे हैं। 2, 6 से 16 में पॉल जो कह रहा था, वह यही कारण है कि मैं जो सुसमाचार प्रचार करता हूँ वह इतना आधिकारिक और इतना महत्वपूर्ण है क्योंकि पद 10 में कहा गया है, परमेश्वर ने हमें, प्रेरित समुदाय को, उन लोगों को प्रकट किया है जो हमें आत्मा के माध्यम से शास्त्र देते हैं। यह पवित्रशास्त्र में आत्मा का कार्य था।

यह हमारे लिए कोई सामान्य पाठ नहीं है। यह कोई ऐसा पाठ नहीं है जिसे कुछ लोग प्रकाश कहते हैं जिसे परमेश्वर अपनी आत्मा के माध्यम से मुझ पर प्रकट करने जा रहा है। नहीं, नहीं, नहीं।

यह वह समुदाय है जिसे परमेश्वर ने हमें एक आधिकारिक शास्त्र बताने के लिए चुना है। परमेश्वर ने ये बातें हम प्रेरितिक समुदाय को बताई हैं, ताकि हम इसे आपके साथ साझा कर सकें। हमारे पास उनसे बाइबल है।

हम बाइबल का निर्माण नहीं करते। हम उन चीजों का निर्माण नहीं करते। अब यह एक और बड़ा विषय है, है न? तो हमने जो दुविधा देखी है, उसका परमेश्वर का समाधान यह है कि उसने हमें एक रहस्योद्घाटन दिया है जो चुनौतीपूर्ण हो सकता है लेकिन हमारे जीवन से निपटने के तरीके के संबंध में हमारे लिए पर्याप्त है।

मुझे लगता है कि अब मुझे अपनी बात पर वापस लौटना चाहिए। तो, जैसा कि हमने बार-बार कहा है, ईश्वर की प्रकट इच्छा शास्त्र में निहित है। इसके अलावा, यह मानवीय नैतिकता के लिए व्यवस्था प्रदान करता है।

यहूदी-ईसाई मूल्यों ने पश्चिमी दुनिया में बहुत सी चीजों को गति दी, जहाँ बाइबल विशेष रूप से प्रमुख थी, और पूर्वी दुनिया में, कुछ हद तक, पूर्वी रूढ़िवादी, पश्चिमी रूढ़िवादी। यह चर्च के इतिहास का मामला है। लेकिन ईश्वर का प्रकट वचन शास्त्र में निहित है, और यह हमारी मानवीय नैतिकता को बदल देता है।

हाल के दिनों तक अमेरिका का अधिकांश भाग यहूदी-ईसाई नैतिकता से बंधा हुआ था। यहां तक कि नास्तिक और अज्ञेयवादी भी काफी हद तक उन नैतिकताओं का पालन करते थे। लेकिन यह सब बदल रहा है क्योंकि हम अमेरिकी संस्कृति में अधिक धर्मनिरपेक्ष बन रहे हैं।

ईश्वर की प्रकट इच्छा को समझने का भार विश्वासियों पर है। चर्च, बेंचों पर बैठे लोग, न केवल उपदेशक जो कि मंच पर बैठे हैं, बल्कि बेंचों पर बैठे लोगों को न केवल सुनना सीखना चाहिए, बल्कि कुछ शोध पढ़कर खुद भी सीखना चाहिए। जाहिर है, समय, परिवार और काम के मामले

में उनकी परिस्थितियाँ अलग-अलग हैं, लेकिन फिर भी उनका दायित्व है कि वे ईश्वर के बारे में सीखें ताकि वे अच्छे ईसाई बन सकें।

आस्तिक की आज्ञाकारिता का क्षेत्र ईश्वर की नैतिक इच्छा है। आप इसके लिए जिम्मेदार हैं। आप रहस्यों के लिए जिम्मेदार नहीं हैं।

आप भविष्य का पता लगाने के लिए जिम्मेदार नहीं हैं। आप वही करने के लिए जिम्मेदार हैं जो भगवान ने आपको अभी करने के लिए कहा है। अब, व्यक्तिगत इच्छा का प्रश्न।

यही बात ईश्वर की इच्छा से जुड़े बहुत से साहित्य और चर्चा को प्रेरित करती है। मेरे लिए ईश्वर की व्यक्तिगत इच्छा क्या है? खैर, जब मैं आपको बाइबल देता हूँ, तो मैं आपको आपके लिए और मेरे लिए ईश्वर की व्यक्तिगत इच्छा सौंपता हूँ, जो कोई भी इसकी जाँच करेगा। ईश्वर की प्रकट इच्छा हमारे लिए है, और इस अर्थ में, यह व्यक्तिगत है।

मैंने वहाँ कॉर्पोरल शब्द इसलिए रखा क्योंकि परमेश्वर का वचन चर्च के लिए है। चर्च व्यक्तियों से बना है। पाठ की उचित व्याख्या की जानी चाहिए।

अब, हमने तीन तरीकों के बारे में बात की है: प्रत्यक्ष, निहित और रचनात्मक निर्माण। ईसाई दुनिया में पाठ के अर्थ के बारे में बहुत विविधता है, और यह एक दिलचस्प बात है जो ईश्वर की इच्छा का हिस्सा है। यह विविधता उसकी इच्छा का हिस्सा है क्योंकि उसने जीवन को इस तरह से व्यवस्थित करने का चुनाव नहीं किया कि इससे छुटकारा मिल जाए।

इसलिए, वह कुछ ऐसा कर रहे हैं जो कभी-कभी हमें समझ में नहीं आता कि पाठ की व्याख्या के बारे में निर्णय लेने में सक्षम लोगों के बीच इतनी विविधता क्यों मौजूद है। हालाँकि, यह एक सृजनात्मक वास्तविकता है। इसके अलावा, ऐसे कोई भी पाठ नहीं हैं जो निर्णय लेने के लिए समय से पहले ईश्वर की इच्छा जानने को बढ़ावा देते हों।

पवित्रशास्त्र में कहीं भी यह नहीं कहा गया है कि निर्णय लेने के लिए आपको पहले से ही इसका पता लगा लेना चाहिए। पुराने नियम में दाऊद के साथ एक बार ऐसा हुआ था जब उसने परमेश्वर से पूछा कि क्या होने वाला है, और परमेश्वर ने उसे बताया। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप प्रेरितों के काम अध्याय 21 में नए नियम के पाठ पर ध्यान दें, जहाँ पौलुस इफिसियों के प्राचीनों से बात कर रहा है, और यहाँ पौलुस ने परमेश्वर की इच्छा के संबंध में और उनके संबंध में परमेश्वर की इच्छा के बारे में जो कुछ भी समझा, उसके संबंध में एक बहुत ही दिलचस्प कथन दिया है।

1 कुरिन्थियों अध्याय में, क्षमा करें, प्रेरितों के काम अध्याय 21 पद 7 में। इसलिए, जब पौलुस ने सोर से यात्रा पूरी की, तो वह टॉलेमाइस पहुंचा, और हमने भाइयों, यानी पौलुस और उसके साथियों का अभिवादन किया। पौलुस हम शब्द का बहुत उपयोग करता है क्योंकि वह खुद को अकेला नहीं मानता। भाई एक दिन उनके साथ रहे।

दूसरे दिन हम वहाँ से चल दिए और कैसरिया में जाकर फिलिप्पुस नामक सुसमाचार प्रचारक के घर में जो सात में से एक था, जाकर उसके साथ रहे। उसकी चार अविवाहित बेटियाँ थीं जो भविष्यवाणी करती थीं।

खैर, मुझे लगता है कि चर्च में महिलाओं की भूमिका होती है, है न? जब हम कई दिनों तक वहाँ रहे, तो अगबस नाम का एक भविष्यवक्ता यहूदिया से आया और हमारे पास आया; उसने पॉल की कमरबंद ली और अपने पैर और हाथ बाँध लिए। भविष्यवक्ता हमेशा इस बात की तस्वीर होते हैं कि क्या होने वाला है। और उसने कहा, यहाँ एक सच्चा भविष्यवक्ता है जो भविष्य बता रहा है।

पवित्र आत्मा ऐसा कहता है। इस तरह यरूशलेम में यहूदी उस व्यक्ति को बाँधेंगे जिसके पास यह बेल्ट है और उसे अन्यजातियों के हाथों में सौंप देंगे। दूसरे शब्दों में, वह कहता है, यदि आप अपनी योजना के अनुसार यरूशलेम जाते हैं, तो आपको कैद कर लिया जाएगा।

और, ज़ाहिर है, हम कहानी का बाकी हिस्सा जानते हैं। जेल में बंद, उसकी जान पर बन आई। आखिरकार वह रोम चला जाता है।

और जब हमने, यानी उन प्राचीनों ने जिन्हें पौलुस सिखा रहा था, यह सुना, तो हमने और वहाँ के लोगों ने उससे आग्रह किया कि वह यरूशलेम न जाए। अब, यहाँ एक अनोखी स्थिति है। भविष्य का पता चल गया है।

पॉल यरूशलेम जाता है, और उसे जेल जाना पड़ता है। उसे कैद कर लिया जाएगा। उसकी आज़ादी छीन ली जाएगी।

ठीक है। अब, हम में से कई लोग कहते हैं, ठीक है, हम निश्चित रूप से भविष्य के बारे में जानना चाहेंगे। मैं हमेशा इस बारे में इतना निश्चित नहीं रहता।

लेकिन हम कहते हैं कि हम निश्चित रूप से भविष्य जानना चाहेंगे क्योंकि अगर हम भविष्य जानते हैं, तो हम अलग-अलग निर्णय लेंगे। अच्छा, एक मिनट रुकिए। क्या आप ऐसा करेंगे? क्या आपको ऐसा करना चाहिए? अगर आप भविष्य जानने के कारण अलग-अलग निर्णय लेते हैं, तो शायद आप अभी सही निर्णय नहीं ले रहे हैं।

तब पौलुस ने उत्तर दिया, "तुम पद 15 में क्या कर रहे हो? रोते हुए और अपना दिल तोड़ते हुए, क्योंकि मैं प्रभु यीशु के नाम पर न केवल जेल में रहने के लिए बल्कि यरूशलेम में मरने के लिए भी तैयार हूँ। और जब वह राजी नहीं हुआ, तो उन्होंने चुप होकर कहा, प्रभु की इच्छा पूरी हो। अब, पौलुस के लिए, यह एक तरह से उसके जीवन के लिए परमेश्वर की योजना थी।

यह परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने और अन्यजातियों के पास जाने के लिए परमेश्वर के आह्वान के प्रति आज्ञाकारी होने की नैतिक इच्छा के अर्थ में था। और फिर भी परमेश्वर की संप्रभुता उसके लिए यह कार्य करने जा रही थी। भविष्य को जानते हुए, पौलुस ने भविष्य में जो संकेत दिया था उसे करने से इनकार कर दिया, लेकिन सुसमाचार के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को जारी रखा।

इसलिए, अगर हम सोचते हैं कि भविष्य जानने से हमारे जीवन के सभी फैसले बदल जाएंगे, तो हम शुरू से ही गलत रास्ते पर हैं। अगर इससे आपके फैसले बदल जाएंगे, तो आप अभी सही फैसले नहीं ले रहे हैं। यह सोचने वाली बात है।

इसलिए, प्रेरितों के काम 2:7 से 14 में पौलुस के पास उन्नत ज्ञान था, और उन्नत ज्ञान निर्णय लेने का मानदंड नहीं है। यह निर्णय लेने के अन्य पहलुओं, और मूल्यों, विश्वदृष्टि और जीवन में हमारे उद्देश्य से आगे निकल जाता है। इसलिए इस विचार को मिटा दें कि यदि आप भविष्य जानते हैं, तो आप इसे बना लेंगे।

नहीं, ऐसा नहीं होगा। आप अभी से ज़्यादा तनाव में होंगे। मैं अभी से ज़्यादा तनाव में होऊंगा।

इसलिए, परमेश्वर की व्यक्तिगत इच्छा परमेश्वर की संप्रभुता में लिपटी हुई है। परमेश्वर की व्यक्तिगत इच्छा उसके वचन के प्रति आज्ञाकारिता में लिपटी हुई है, लेकिन हमें कभी भी यह नहीं बताया जाता कि कार्य करने के लिए इसे समझना चाहिए। हम अन्य आधारों पर कार्य करते हैं।

भगवान की प्रकट इच्छा, अगली स्लाइड, स्लाइड 10, भगवान की प्रकट इच्छा हमारे लिए है, और उस वाक्य में, यह व्यक्तिगत है। अगर कोई पूछता है, आपके लिए भगवान की व्यक्तिगत इच्छा क्या है? बस उन्हें बाइबल की ओर धकेलें क्योंकि यही है। यह व्यक्तिगत है।

यह शारीरिक है। हम सभी ईश्वर से वंचित हैं। जैसा कि हमने बताया है, ग्रंथों की उचित व्याख्या की जानी चाहिए।

ऐसे कोई भी ग्रंथ नहीं हैं जो निर्णय लेने से पहले ईश्वर की इच्छा जानने को बढ़ावा देते हों, और हमने वह अंश पढ़ा है। इसलिए, परिवर्तन बाइबिल की शिक्षा पर आधारित एक तर्कसंगत प्रक्रिया है। एक परिवर्तित मन का उत्पाद हमारा विश्वदृष्टिकोण और हमारे मूल्य हैं।

डीजा वु जैसा लगेगा। जैसा कि मैंने बताया, हमने इन व्याख्यानों में दोहराव की योजना बनाई है ताकि व्याख्यानों के अंत तक, आप उस तरह से सोचना शुरू कर दें जैसा मैं चाहता हूँ। हमारे पास क्या है? खैर, इस बार हमारे पास कुछ हद तक खुश रहने वाला व्यक्ति है, लेकिन हमारे पास डेटा है जो हमारे विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों से गुजरता है, और यह दूसरी तरफ अर्थ लाता है।

एक मसीही के रूप में निर्णय लेने के लिए परिवर्तित मन ही कुंजी है। अब, आगे बढ़ते हैं। स्लाइड संख्या 13.

हम पाएंगे कि जीवन के बारे में कई सवालों का कोई बाइबल पाठ नहीं है जो सीधे हमारी चिंताओं का जवाब दे सके। यही बाइबल की सीधी शिक्षा है। संस्कृतियाँ बदलती हैं, समय बदलता है, और परिस्थितियाँ बदलती हैं, लेकिन इससे हम अकेले नहीं रह जाते।

बाइबल पुरानी नहीं है। यह हमेशा की तरह ही प्रासंगिक है, लेकिन यह उन तरीकों से प्रासंगिक है जिन्हें हमें खोलना है, किसी सतही प्रमाण पाठ के रूप में नहीं। इसलिए, ऐसे बहुत से प्रश्न हैं जिनसे हमें निपटना है, और हम उन प्रश्नों से विश्वदृष्टि और मूल्यों की जटिलता के माध्यम से निपटते हैं, आध्यात्मिक सुविधा के माध्यम से नहीं, न कि मैं क्या सोचता हूँ कि बुद्धिमानी है, बल्कि आप इन चीजों से शास्त्रों के भीतर अनुशासित खोज के माध्यम से निपटते हैं जो आपके पास मौजूद प्रश्न के बारे में जानकारी के लिए है।

इसके अलावा, हम आगे कैसे बढ़ें? खैर, हम जीवन के मुद्दों को बाइबल के विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों के मॉडल को लागू करके समझते हैं जो हमारे सामने आने वाले मुद्दों पर लागू होते हैं। हम अपने तर्क की रेखाओं को पाठ से लेकर हमारे मुद्दे तक विकसित करते हैं। मैं इस पर ज़ोर देना चाहता हूँ।

मुझे इस पर ज़ोर देना चाहिए। A से Z तक, अल्फा से ओमेगा तक तर्क की रेखाएँ। हमारे पास तर्क की रेखाएँ हैं जो हमें बिंदु A से अंत तक ले जाती हैं, और जब हम निर्णय ले रहे होते हैं, तो हमें उसी तरह सोचना चाहिए।

तर्क की कई पंक्तियाँ हैं। बुद्धि का अर्थ है कुशलता से जीना, परमेश्वर के वचन का कुशलता से उपयोग करके उन मुद्दों की व्याख्या करना जिनका हम इस दुनिया में सामना करते हैं, और हमें इसे समझाने में सक्षम होना चाहिए। अब, हो सकता है कि हमारी व्याख्याएँ हमेशा वास्तव में परिष्कृत न हों, लेकिन तथ्य यह है कि हम अंधेरे में तीर नहीं चला रहे हैं, बल्कि हम प्रकाश में हैं, परमेश्वर के रहस्योद्घाटन के प्रकाश में, और यह हमें मार्गदर्शन देता है यदि हम इसकी खोज करेंगे।

तो, हमारे अध्ययन का लक्ष्य क्या है? खैर, यहाँ कुछ दोहराव है। आपके लिए मेरा लक्ष्य, और मुझे लगता है कि परमेश्वर का आपके लिए लक्ष्य जिस तरह से उसने अपनी इच्छा प्रस्तुत की है, वह है आपको एक ऐसा व्यक्ति बनाना जो आत्म-चेतन विचार-विमर्श के साथ अब यह नोटिस करे कि ये शब्द कितने अर्थ ले रहे हैं। आत्म-चेतन विचार-विमर्श।

आप जानते हैं कि आप क्या कर रहे हैं। यह सिर्फ अंधेरे में छलांग लगाने जैसा नहीं है। आप आलोचनात्मक रूप से कह सकते हैं।

दूसरे शब्दों में कहें तो यह कोई आसान काम नहीं है। आपको इसके लिए मेहनत करनी होगी। आपको खुद को आगे बढ़ाना होगा।

आपको पढ़ना होगा। आपको शोध करना होगा। आपको उत्तरों की तुलना करनी होगी।

आपको इन मुद्दों के लिए बड़े चर्च की ओर देखना होगा, जिन्हें बाइबल सीधे संबोधित नहीं करती है, क्योंकि उनके अलग-अलग उत्तर हैं। लेकिन आपको वह काम करना होगा, और आप कहेंगे, मुझे खेद है, मैंने इसके लिए साइन अप नहीं किया। खैर, मुझे खेद है।

जब आप ईश्वर की संतान बन गए, तो आपने इसके लिए नामांकन किया। यह सेना की तरह नहीं है। आपने नामांकन किया, और यही वह भूमिका है जिसे आपको निभाना होगा।

अगर आप चाहें तो यह एक किसान का रूपक है। बाइबल के विश्वदृष्टिकोण और मूल्य प्रणाली के अनुरूप जीवन के निर्णयों के बारे में गंभीरता से सोचें। यह प्रक्रिया हमें मार्ग प्रदान करती है।

यह सिर्फ प्रार्थना करने और किसी आवाज़ के आपके दिमाग में आने का इंतज़ार करने का मार्ग नहीं है। परमेश्वर ने इसे इस तरह से प्रस्तुत नहीं किया है। ऐसा शायद छुटकारे के इतिहास में उस समय हुआ होगा जब परमेश्वर प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन कर रहा था, लेकिन अब ऐसा नहीं हो रहा है।

आप प्रार्थना कर सकते हैं, लेकिन आपके सामने बाइबल खुली हुई है, और आपके पास ऐसे उपकरण हैं जिनसे आप अपने निर्णय के लिए प्रासंगिक जानकारी पा सकते हैं। अब, आप कहेंगे, यार, यह मेरे ऊपर है। मैं सप्ताह में 50 घंटे काम करता हूँ।

मैं बस थक गया हूँ। मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता। खैर, मैं यह समझता हूँ।

लेकिन जीवन में कहीं न कहीं, आपको एक ऐसा स्थान बनाना होगा जहाँ आप धीरे-धीरे, कदम दर कदम, हमारे प्रभु यीशु के अनुग्रह और ज्ञान में बढ़ सकें और परमेश्वर की इच्छा को समझ सकें जैसा कि पवित्रशास्त्र में प्रस्तुत किया गया है ताकि आप अपने और अपने परिवार के लिए अच्छे निर्णय ले सकें। और निश्चित रूप से, इसका दूसरा हिस्सा यह है कि आप चर्च जाएँ। आपके चर्च में योग्य व्यक्ति होने चाहिए जो इस कथन के अनुसार पवित्रशास्त्र को अनुचित, गहन तरीके से खोल सकें।

ऐसे पादरियों को मत बुलाओ जो अशिक्षित हैं। आप कहेंगे, ठीक है, लेकिन उन्हें छेदे हुए हाथ से नियुक्त किया गया है, जैसा कि इतिहास में एक व्यक्ति ने कहा था। खैर, यह अच्छी बात है।

और मैं जानता हूँ कि इनका लोगों पर बहुत बड़ा असर होगा, लेकिन सीमित तरीके से। लोग बच जाएँगे। लोग परमेश्वर से प्रेम करेंगे।

लोग प्रार्थना करेंगे। लोग अपनी बाइबल पढ़ेंगे, और उन्हें बाइबल में कही गई बातों की ज़रा सी भी समझ नहीं होगी। उन्हें हर रविवार को सामान्य सत्यों की नैतिकता मिलेगी, और यही वह हिस्सा है जो हमें सही रास्ते पर रखता है।

लेकिन सच तो यह है कि अगर आप भगवान को खुश करना चाहते हैं, अगर आप भगवान की इच्छा पूरी करना चाहते हैं, तो आपको औसत दर्जे से ऊपर उठना होगा। मैंने हाल के वर्षों में ज़्यादा चर्च देखे हैं, अच्छे चर्च, जो कानों को गुदगुदाने वाले हैं। वे बस एक खास तरीके से बातें सुनना पसंद करते हैं।

अगर आप उन पर दबाव डालते हैं और सवाल करते हैं, तो उन्हें यह पसंद नहीं आता। क्यों? क्योंकि वे अपने सोचने के तरीके से सहज रहना चाहते हैं, जिसका वे हमेशा आनंद लेते आए हैं। मैं कई बार सुकरात जैसा महसूस करता हूँ।

आप जानते हैं, उन्होंने सुकरात को मार डाला क्योंकि उसने बहुत सारे सवाल पूछे थे। मेरे पास बहुत सारे सवाल हैं, और मैं अभी भी जीवित हूँ, कम से कम। बाइबिल का विश्वदृष्टिकोण और मूल्य प्रणाली।

यह प्रक्रिया हमें रास्ता दिखाती है। अब, मैंने यह काफी कह दिया है, और मैंने आपको इस पर वापस आने के लिए सभी तरह के रास्ते बताए हैं। वे आपको कुछ हद तक समझ में आने लगेंगे।

ठीक है, तो यह हमारा आकलन है। यह जी.एम. 6 से संबंधित है, और हम जी.एम. 7 के लिए अगले व्याख्यान में वापस आएंगे। यदि आप अपनी विषय-सूची को देखें तो क्या होगा? हम बस इसकी समीक्षा करेंगे। हम भाग दो में आगे बढ़ेंगे।

विषय-सूची पर मेरे कथन पर ध्यान दें। हमने परमेश्वर की इच्छा जानने के बारे में बाइबल की गवाही को देखा है। हमने पाया है कि जीवन के बारे में हमारे कई सवालों का कोई बाइबलीय पाठ नहीं है जो उस चिंता को सीधे संबोधित करता हो।

इसलिए, हमें बाइबल के मार्गदर्शन के दूसरे पहलू को भी सीखना चाहिए। हमें इसमें शामिल होने की ज़रूरत है। मैंने विश्वदृष्टि और मूल्यों के बारे में इतनी बार कहा है कि आप इससे थक चुके हैं।

और शायद आप कह रहे हैं, अच्छा, कृपया मुझे बताइए कि यह क्या है। खैर, हम ऐसा करने वाले हैं। खैर, हमारे पास एक विशिष्ट उपयुक्त पाठ है।

हमें अपने मुद्दों को बाइबल और विश्वदृष्टि मूल्यों के मॉडल के अनुसार समझना चाहिए। दूसरा भाग विवेक है, जिसके लिए इस विश्वदृष्टि और मूल्य मॉडल की आवश्यकता होती है। यहाँ हम इस बात पर आते हैं कि बाइबल हमारी निर्णय लेने की प्रक्रिया में कैसे फिट बैठती है।

और मैं इसे आपको समझाऊंगा। कुछ डीजा वु होगा क्योंकि हमने कई चीजों के बारे में बात की है, लेकिन हम अगले कई व्याख्यानों में गहराई से और अधिक व्याख्यात्मक तरीके से बात करेंगे। व्याख्यान 7 और 8, 9 और 10।

और फिर हम उस विषय पर पहुंचेंगे जिसमें आपको वास्तव में मजा आएगा। और इसे हम व्याख्यान 11 से 14 में व्यक्तिपरक चुनौतियां कहते हैं। तो, इतने लंबे समय तक बने रहने के लिए आपका धन्यवाद, और मुझे आशा है कि आप हमारे प्रभु यीशु के अनुग्रह और ज्ञान में लाभान्वित हो रहे हैं और बढ़ रहे हैं।

प्रार्थना करें कि आपका दिन अच्छा हो और आप अपने जीवन में ऐसे अवसर पाएं जहां आप परमेश्वर के वचन को सीखने पर ध्यान केंद्रित कर सकें।